“पूर्व मध्यकालीन भारत में सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया जातिगत पदानुक्रम, धार्मिक वैधता, आर्थिक परिवर्तन और राजनीतिक संरक्षण में जटिल अंतःक्रिया " (भाग -2)

3. आर्थिक परिवर्तन (Economic Transformation)

- भूमि अनुदान की प्रथा: पूर्व मध्यकालीन भारत में भूमि अनुदान (विशेषकर ब्राह्मणों और मंदिरों को) एक महत्वपूर्ण आर्थिक परिवर्तन था। इसने सामंतवादी व्यवस्था को जन्म दिया, जहाँ भूमि प्राप्तकर्ताओं (सामंतों) को राजस्व संग्रह और प्रशासन के अधिकार मिले। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में ब्राह्मणों और सामंतों के एक वर्ग की स्थिति मजबूत हुई और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था का विकास हुआ।

- व्यापार और वाणिज्य का पतन: गुप्तोत्तर काल से व्यापार और वाणिज्य में गिरावट आई, जिससे नगरों का पतन हुआ और ग्रामीण अर्थव्यवस्था अधिक आत्मनिर्भर हो गई। इससे कारीगरों और व्यापारियों की गतिशीलता कम हुई, और वैश्यों की स्थिति में गिरावट आई, कई बार उन्हें शूद्रों के स्तर पर देखा जाने लगा।

- कृषि का विस्तार और नई जातियों का उदय: कृषि के विस्तार से नई भूमि को खेती के अधीन लाया गया, जिससे जनजातीय समुदायों का कृषक और जाति के रूप में रूपांतरण हुआ। उदाहरण के लिए, बड़े पैमाने पर लेखाकारों की आवश्यकता के कारण 'कायस्थ' समुदाय एक जाति के रूप में उभरा।

- क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं का विकास: व्यापारिक गतिविधियों के कमजोर पड़ने से स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं और आत्म-निर्भर ग्रामीण समुदायों का विकास हुआ, जिससे क्षेत्रीय पहचान और स्थानीय संस्कृतियों को बढ़ावा मिला।

4. राजनीतिक संरक्षण (Political Patronage)

- राजाओं द्वारा संरक्षण: राजाओं और शासकों ने ब्राह्मणों, विद्वानों और धार्मिक संस्थाओं को भूमि, धन और उपाधियों के रूप में संरक्षण दिया। इससे इन समूहों की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति और मजबूत हुई।

- सामंतों का अभ्युदय: राजनीतिक विकेंद्रीकरण और सामंतवाद के उदय ने एक नए अभिजात वर्ग को जन्म दिया। ये सामंत, जिन्हें अक्सर राजाओं द्वारा भूमि और अधिकार दिए जाते थे, स्थानीय स्तर पर शक्तिशाली बन गए और अपनी सामाजिक स्थिति को मजबूत किया।

- क्षत्रियकरण की प्रक्रिया: अनेक जनजातीय मुखियाओं या सैन्य साहसी लोगों को शासकों द्वारा क्षत्रिय का दर्जा देकर समाज में एकीकृत किया गया। इस राजनीतिक संरक्षण ने उन्हें उच्च सामाजिक पदानुक्रम में शामिल होने का अवसर दिया।

- प्रशासनिक पदों का उदय: प्रशासन में नई आवश्यकताओं के कारण 'कायस्थ' जैसे पेशेवर समूहों का उदय हुआ, जिन्हें राजनीतिक संरक्षण प्राप्त था। ये समूह लेखन और प्रशासनिक कार्यों में विशेषज्ञ थे और धीरे-धीरे एक जाति के रूप में विकसित हुए।

पूर्व मध्यकालीन भारत में सामाजिक गतिशीलता एक बहुआयामी प्रक्रिया थी जो जातिगत पदानुक्रम की अंतर्निहित कठोरताओं, धार्मिक प्रथाओं, आर्थिक बदलावों और राजनीतिक संरक्षण के जटिल मिश्रण से प्रेरित थी। इन कारकों ने मिलकर एक गतिशील सामाजिक संरचना का निर्माण किया, जिसमें जहाँ एक ओर ब्राह्मणों और सामंतों का प्रभुत्व बढ़ा, वहीं दूसरी ओर कुछ समूहों के लिए सामाजिक उत्थान के सीमित अवसर भी पैदा हुए। इस दौर में समाज का पूरी तरह से पुनर्गठन नहीं हुआ, बल्कि मौजूदा व्यवस्था में ही महत्वपूर्ण समायोजन और नवीनताएँ देखी गईं, जिससे भारतीय समाज की लचीलापन और अनुकूलनशीलता परिलक्षित होती है।